# <u>संकट निरसन तीन गुरुवार व्रत</u>

|| ओम श्री साई प्रसन्न ||

|| श्री तुळजाई प्रसन्न ||

जगदिशा नारायणा हे ईश्वरा प्रभू विश्वेश्वरा, तव चरणी अर्पण सर्व गुण सर्व, सर्व इच्छा, सर्व चिंता तुझ्याच चरणी. शरण आलो करावे कल्याण ह्या जीवनाचे. सार्थक तुझ्याच चरणी, मज न ठाऊक दुजा कोणी. तुझीच लीला अपरंपार, तुझाच सेवेस मी तत्पर, तुझीच भक्ती मज प्रिय, तुझेच चित्त माझ्या मनी,तारशील सर्व संकटातूनी. भीती, भय, चिंता अर्पण तुझ्याच चरणी. तूच मत, तूच पिता, तूच परमेश्वर जगदीशा. तुझ्याच स्थानी माझी सेवा, दृढ भक्ती तुझ्याच चरणी देईल संकटातूनी मुक्ती.तुझी दृष्टी आम्हा वरती, करील दूर सर्व कष्ट.बीज मंत्र, मुल मंत्र, गुप्त मंत्र, सर्व अर्पण तुझ्याच चरणी.तुझीच भक्ती आम्हा रक्षी. भक्त संकटी येत ठेवी तुझ्या पायी माथा, तुझा कृपा-आशीर्वाद होता हरतील सर्व चिंता.पूर्ण होतील सर्व मनोकामना.मग आनंदी आनंद चोहीकडे.त्या आनंदाची नाही सीमा, म्हणूनच;

|| अनंत अनंत म्हणा||

||श्री साई अनंत म्हणा||

||श्री भगवती अनंत म्हणा||

||श्री राम अनंत म्हणा||

||श्री कृष्ण अनंत म्हणा||

ओम श्री साई अनंत अर्पणमस्तू

|| शुभं भवतु||

<u>श्री गणपतीची आरती</u>

सुखकर्ता दुखहर्ता वार्ता विघ्नाची
नुरवी पूर्वी प्रेम कृपा जयाची
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदुराची
कंठी झळके माळ मुक्ताफळांची
जयदेव जयदेव जय मंगल मूर्ती
दर्शनमात्रे मन कमान पुरती जयदेव जयदेव || धृ ||

रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा
चंदनाची उटी कुम्कुम्केशारा
हिरेजडीत मुकुट शोभतो बरा
रुंझुंती नुपुरे चरणी घागरिया
जयदेव जयदेव......|| १ ||

लंबोदर पितांबर फणीवरनंदना
सरळ सोंड वर्क्रतुन्द्त्रीनयाना
दास रामाचा वात पाहे सदना
संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवरनंदना
जयदेव जयदेव......|| २ ||

## श्री देवीची आरती

दुर्गे दुर्घट भारी तुजवीण संसारी
अनाथनाथे आंबे करुणा विस्तारी
वारी वारी जन्म मरणाचे वारी
हारी पडलो आता संकट निवारी ||१||
जयदेवी जयदेवी जय महिषासुर मर्दिनी
सुरवरईश्वरवरदे तारक संजीवनी जयदेवी जयदेवी || धृ ||

त्रिभुवन भुवनी पाहता तुज ऐसे नाही
चारी श्रमले परंतु न बोलवे काही
सही विवाद करिता पडिले प्रवाही
ते तू भक्तालागी पावसी लवलाही ||२||
जयदेवी जयदेवी.....|| धृ ||

प्रसन्न वदने प्रसन्न होसी निजदासा
क्लेश पासुनी सोड तोडी भवपाशा
आंबे तुज वाचून कोण पुरवील आशा
नरहरी तल्लीन झाला पदपंकजलेशा ||३||
जयदेवी जयदेवी.....|| धृ ||

## श्री दत्ताची आरती

त्रिगुणात्मक त्रिमूर्ती दत्ता हा जाणा |
त्रिगुणी अवतार त्रैलोक्य  राणा |
नेती नेती शब्द नये अनुमाना |
सुरवर मुनिजन योगी समाधी न ये ध्याना ||१||
जयदेव जयदेव जय श्री गुरुदत्ता |
आरती ओवाळीता हरली भवचिंता ||धृ||

सबाह्य अभ्यंकरी  तू एक दत्ता |
अभाग्यासी कैसी न कळे हि मात  |
पराही परतली तेथे कैचा हा हेत |
जन्म मरणाचा पुरलासे अंत ||जयदेव..||२||

दत्त येऊनिया ऊभा ठाकला |
सदभावे साष्टांगे प्रणिपात केला |
प्रसन्न होऊनी आशीर्वाद दिधला |
जन्म मरणाचा फेरा चुकविला ||जयदेव..||३||

दत्त दत्त ऐसे लागले ध्यान |
हरपले मन झाले ऊन्मन |
मितुंपणाची झाली बोळवण |
एका जनार्दनी श्री दत्त ध्यान ||जयदेव..||४||

## श्री साईबाबांची आरती

आरती साईबाबा | सौख्य दातार जीवा | चरण रजातळी |
द्यावा दासा विसावा | भक्ता विसावा || आरती.. || धृ ||
जाळूनिया अनंग | सस्वरूपी राहे दंग | मुमुक्षु जना दावी|
नीजडोळा श्रीरंग | डोळा श्रीरंग ||आरती.. || १||
जयामानी जैसा भाव | तया तैसा अनुभव | दाविसी दयाघना |
ऐसी तुझी हि माव | तुझी हि माव ||आरती..||२||
तुमचे नाम घ्याता | हरे संस्कृती व्यथा | अगाध तव करणी |
मार्ग दाविसी अनाथ | दाविसी अनाथा ||आरती...||३||
कलियुगी अवतार | सगुण ब्रम्हा साचार | अवतीर्ण जाहलासे |
स्वामी दत्त दिगंबर | दत्त दिगंबर ||आरती..|| ४||
आठा दिवसा गुरुवारी | भक्त करिती वारी | प्रभुपद पहावया |
भव भय निवारी | भय निवारी ||आरती..||५||
माझा नीज द्रव्य ठेवा | तव चरण रज सेवा | मागणे हेची आता |
तुम्हा देवाधी देवा | देवाधी देवा ||आरती..||६||
इच्छित दिन चातक | निर्मळ तोय नीज सुख | पाजावे माधवा या |
सांभाळ आपुली हि भाक | आपुली हि भाक ||आरती..||७||

## ओम जग्दिशाची आरती

ओम जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे |
भक्त जनो के संकट दास जनो के संकट क्षण मे दूर करे ||धृ||
जो घ्यावे फल पावे | दुख विनसे मन का | स्वामी दुख विनसे मन का |
सुख संपती घर आवे | कष्ट मिते तन का || ओम ..||१||
माता पिता तुम मेरे | शरण पडू मै किसकी | स्वामी शरण पडू मै किसकी |
तुम बिन और न दुजा | प्रभू दिन और न दुजी | आस करू मै किसकी ||ओम..||२||
तुम पुरण परमात्मा | तुम अंतर्यामी | स्वामी तुम अंतर्यामी |
पार ब्रम्हा परमेश्वर | तुम सेवक स्वामी ||ओम..||३||

तुम करुणा के सागर | तुम पालन करता | स्वामी तुम पालन करता |
मै मुरख फलकाम मै | सेवक तुम स्वामी ||ओम..||४||
कृपा करो विषय विकार मिटाओ | पाप हरो देवा |
स्वामी पाप हरो देवा | श्रद्धा भक्ती चढाओ | संतान कि सेवा ||ओम..||५||
तन मन धन है तेरा स्वामी | सबकुच्ह है तेरा |
तेरा तुझको अर्पण | तेरा तुझको अर्पण | क्या लागे मेरा ||ओम...||६||
दिन बंधू दुख हरता ठाकूर | तुम मेरे स्वामी | रक्षक मेरे स्वामी |
अपने हाथ उठाओ | अपनी शरण मै बिठाओ | द्वार खडा मै तेरे ||ओम..||७||

## साईंची आरती

साई रहम नजर करना |
बच्चो का पालन करना ||धृ||

जाना तुमने जगत्पसारा X २
सबही झूठ जमाना ओ साई साई |
सबही झूठ जमाना ||१|| साई....

मी अंधा हुं बंदा आपका X २
मुझसे प्रभू दिख्लाना ओ साई साई |
मुज्ख्से प्रभू दिख्लाना ||२|| साई....

दास गणू काहे अब क्या बोलू X २
थक गाई मेरी रसना ओ साई साई |
थक गाई मेरी रसना ||३|| साई....

## देव बाबांची आरती

आरती करितो देवबाबा आम्हा तू तारी ||धृ||
पाजुनिया भक्त देवा भक्तीचे वारी ||धृ|| आरती..

कार्य कराया कल्याणाचे होशी अवतारी |
नेणती तुजला म्हणोनी गणती मानव साचारी ||१|| आरती....

नाथपंथ तो धन्य कराया धरिसी करी झोळी |
त्यागुनिया वस्तरा देवा पापांची होळी ||२|| आरती....

काम क्रोध हे जाळूनी सखया उद्धरसी सकला |
अनंतदेव झाला बाबा साई खरा भोला ||३|| आरती....

आरती करिता ध्यान पाहता काय दिसे डोळा |
नारायण तो विकल होऊनी घेई पदी लोळा ||४||
आरती करितो, आरती करितो, आरती करितो
देवबाबा आम्हा तू तारी ||

<u>अष्टक</u>

प्रारंभ चैत्र ऋतू ये वसंता | तो नेम मान्या संता महानता |
चिरंजीव हे पीठ होवोनी आता | नमस्कार साष्टांग गोरक्षनाथा ||१||

घेउनी अवतार ह्या मर्त्यलोका | देऊनी प्रेम वारी कुशंका |
शंका नको ती मजलागी आता | नमस्कार साष्टांग गोरक्षनाथा ||२||

कल्याण प्रांती वसती करोनी | मलंग हाजी गाजी ठरोनी |
समाधिस्त झालात मच्छिंद्रनाथा | नमस्कार साष्टांग गोरक्षनाथा ||३||

महात्म्य मोठे गाजे जयांचे | नवसास पावे करिता ब्रीदाचे |
रक्षी करी सार्थ काळा हि शास्ता | नमस्कार साष्टांग गोरक्षनाथा ||४||

उदिनाम बाहे घेता जयांसी | विभूत बाधा पळवी भूतासी |
होईल आराम रोग्यासी देता | नमस्कार साष्टांग गोरक्षनाथा ||५||

पाहोनी दाढी जटा वाढलेली | गमेची शंभो त्रय नेत्र भाळी |
मदनांतकारी दासासी त्राता | नमस्कार साष्टांग गोरक्षनाथा ||६||

अद्यंतही सत्य नसे हो जयासी | आहे हिरा दिव्या स्वयं प्रकाशी |
होवोनी भक्ता सुख शांती दाता | नमस्कार साष्टांग गोरक्षनाथा ||७||

गोरक्ष रक्षा आघाब्धी भक्ष | देईल मोक्ष धरी शुद्ध पक्षा |
पुरवी अपेक्षा सर्वज्ञ होता | नमस्कार साष्टांग गोरक्षनाथा ||८||

नारायणासी पदी भालदारी | स्थापोनी रक्षी कर ठेव शिरी |
करवोनी घ्यावी सेवा अनंता | नमस्कार साष्टांग गोरक्षनाथा ||९||

निरालास्य सप्रेम सेवा घडावी | अनंता तुझे पायी भक्ती जडावी |
ध्यावे तुला नित्य प्रेमेची नाथा | देई मला हा वर रक्ष आता ||१०||

--अलख निरंजन गोरक्षनाथ महाराज कि जय --